यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल
जनवरी–मार्च 2021
वर्ष 11, अंक–21

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

आवरण चित्र
अंकीता चौहान

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
बेवसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- **'अग्नि-ऋचा' कलाम की जीवन यात्रा... :** *प्रो. रमा* 3
- **'कभी न छोड़े खेत'** / *प्रो. इंदु वीरेंद्रा* 6
- **हिंदी में अनुसंधान : स्थिति...** / *प्रो. सत्यकेतु सांकृत* 9
- **भक्तिकालीन कविता के...** / *प्रो. कैलाश नारायण तिवारी* 12
- **रंगमंच की अंतरयात्रा** / *प्रो. चंदन कुमार* 15
- **नवगीत काव्य-धारा का उद्भव...** / *डॉ. प्रकाश चंद्र गिरि* 17
- **कविता : मिथक और पारिस्थितिकी** / *प्रो. गजेंद्र पाठक* 20
- **साठोत्तरी हिंदी कविता : परिवेश...** / *प्रो. रसाल सिंह* 24
- **संत रविदास : व्यक्तित्व एवं विचार** / *डॉ. राजेश पासवान* 27
- **'आत्मजयी' और 'वाजश्रवा के ...** / *अभिनव प्रकाश* 30
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की ...** / *डॉ. अमित सिन्हा* 33
- **भाषायी अवरोधों को तोड़ता ...** / *डॉ. कविता भाटिया* 36
- **निर्मल वर्मा की रचनाओं में सामाजिक ...** / *डॉ. अमृता* 39
- **स्वावलंबन और गांधीजी** / *डॉ. सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी'* 42
- **नारी समस्या और कृष्णा सोबती ...** / *अनिता देवी* 44
- **आदिवासी हिंदी उपन्यासों का उद्भव ...** / *अंजली कुमारी* 47
- **राकेश रेणु की कविताई : स्त्री मन ...** / *अंकिता चौहान* 50
- **जयशंकर प्रसाद की प्रकृति विषयक ...** / *डॉ. अर्चना त्रिपाठी* 53
- **अल्पसंख्यक विमर्श का स्वरूप और ...** / *डॉ. आसिफ उमर* 55
- **समकालीन हिंदी स्त्री कविता में पितृसत्ता ...** / *भव्या कुमारी* 58
- **कोरोना के भयावह दौर में पलायन ...** / *भावना* 61
- **समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त ...** / *चंद्रकांत सिंह* 64
- **द्रविड़ भक्ति-काव्य : उद्भव, स्वरूप ...** / *डी.ए.पी. शर्मा* 67
- **विभाजन और विस्थापन की ...** / *डॉ. दीपिका विजयवर्गीय* 71
- **बाणभट्ट की आत्मकथा में ...** / *डॉ. पल्लवी* 73
- **अशोक एक बौद्ध के रूप में** / *दुर्गेश पाण्डेय* 75
- **'पीली आँधी' सामाजिक विसंगतियों ...** / *हुलासी राम मीना* 78
- **'गालिब ग़ैर नहीं हैं, अपनों से अपने हैं'** / *मोहम्मद जावेद* 81
- **नारी मनोविज्ञान और जैनेंद्र कुमार ...** / *जयश्री काकति* 85
- **गांधी और राष्ट्रभाषा हिंदी** / *डॉ. कमलेश कुमारी* 88
- **आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी और संतराम बी.ए.** / *कविता देवी* 91
- **स्त्री विमर्श की अवधारणा और ...** / *डॉ. महजबी* 94
- **केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में ...** / *डॉ. मणिबेन पटेल* 97
- **श्री हरिपद्मनाभ शास्त्री ...** / *प्रो. मन्जुनाथ एन. अंविग* 99
- **काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में ...** / *डॉ. मंजुल शर्मा* 102
- **कोरोना महामारी के ...** / *ज्योति भोला-नम्रता सोनी* 105
- **कश्मीरी स्त्री : अनसुनी पीड़ा ...** / *नेहा चतुर्वेदी* 108

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

- **ब्रज लोक गीतों में ...** / *डॉ. नृत्य गोपाल* 111
- **जकिया जुबैरी की ...** / *निर्मल रानी* 114
- **समाज का ध्वनिग्राहक कवि** / *निशा नाग* 116
- **भारतीय सिनेमा और ...** / *पल्लवी* 119
- **कुबेरनाथ राय के ...** / *प्रदीप कुमार तिवारी* 122
- **सिक्किम में हिंदी का ...** / *डॉ. प्रदीप त्रिपाठी* 124
- **मॉरीशस ...** / *प्रो. सच्चिदानंद चतु.-प्रियंका कु.* 127
- **सामाजिक-सांस्कृतिक ...** / *प्रियंका राय* 130
- **संत कवि गुरु नानक ...** / *डॉ. राजेश कुमार शर्मा* 133
- **नवजागरण और भारत-दुर्दशा** / *राजकुमार शर्मा* 136
- **जाम्भोजी महाराज ...** / *डॉ. राजमोहिनी सागर* 139
- **छायावादी काव्य में ...** / *डॉ. रीतामणि वैश्य* 142
- **आदिवासी केंद्रित ...** / *डॉ. रूपेश कुमार* 145
- **भारतीय साहित्य में ...** / *साधना वर्मा* 149
- **भिखारी ठाकुर के ...** / *डॉ. संगीता राय* 152
- **पिंजर उपन्यास में ...** / *शरिफुज जामान* 154
- **हिंदी साहित्य में व्यंग्य ...** / *शिलाची कुमारी* 157
- **जीवन से ...** / *डॉ. सुनील कुमार सुधांशु* 159
- **स्त्री शोषण का ...** / *सुनील कुमार यादव* 162
- **किसानी संस्कारों ...** / *सूर्यनाथ सिंह* 165
- **नई सदी की प्रमुख ...** / *डॉ. तारु एस. पवार* 169
- **आदिवासी जीवन ...** / *डॉ. प्रेमी मोनिका तोपनो* 172
- **आत्मकथाओं में लैंगिक ...** / *उमा मीना* 176
- **दलित कथाकार ...** / *वीरेन्दर* 179
- **हिंदी दलित कहानियाँ ...** / *विजय कुमार* 182
- **विवाह-विच्छेद एवं ...** / *विकास कुमार सिंह* 185
- **हिंदी नवजागरण ...** / *डॉ. विनय कुमार गुप्ता* 187
- **अंबेडकर का ...** / *डॉ. वीरेंद्र सिंह कश्यप* 189
- **युग प्रवर्तक के ...** / *अखिलेश यादव* 192
- **माध्यमिक स्तर ...** / *अमित कुमार दूबे* 194
- **जनतांत्रिक मूल्य : ...** / *डॉ. अश्विनी कुमार* 197
- **दुष्यंत कुमार का ...** / *आजाद* 200
- **चीन में हिंदी ...** / *डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी* 203
- **21वीं सदी के नाटकों ...** / *डॉ. गणेश* 206
- **हिंदी उपन्यासों ...** / *जैनेंद्र चौहान* 209
- **रमेशचंद्रशाह की ...** / *कृपा शंकर* 212
- **जैनदर्शन में कर्मवाद** / *छाया* 214
- **"समकालीन संदर्भ ...** / *नमित कुमार सिंह* 218
- **दिल्ली की शहरीकरण ...** / *डॉ. गगन दीप* 221
- **क्या भूलूँ क्या याद ...** / *नूतन सतपथी* 224
- **छायावादी कवियों ...** / *डॉ. जी. पद्मावती* 227
- **इक्कीसवीं सदी की ...** / *डॉ. पठान रहीम खान* 230
- **स्त्री मुक्ति का 'हंस'** / *प्रिया कौशिक* 234
- **पारसी रंगमंच के नाटक ...** / *डॉ. राखी उपाध्याय* 237
- **बौद्ध पारिस्थितिकी की ...** / *डॉ. रणजीत कुमार* 240
- **रेणु के कथा ...** / *रश्मि शर्मा* 243
- **जयप्रकाश कर्दम के ...** / *डॉ. जी.वी. रत्नाकर* 246
- **स्त्री के स्तर को सुधारने ...** / *रीना कुमारी* 248
- **धूमिल के काव्य का ...** / *शेख हीना अनवर* 251
- **जनजातियों के भिन्न ...** / *स्मृतिरेखा नायक* 254
- **रहीम के नीतिकाव्य ...** / *डॉ. सुधीर कुमार शर्मा* 257
- **भास कृत उदयनकथाश्रित ...** / *सुमन कुमारी* 260
- **आधुनिक समाज एवं ...** / *डॉ. उदय कुमार* 263
- **उत्तर प्रदेश के जनपद ...** / *उमेश कुमार तिवारी* 265
- **सुशीला टाकभौरे की ...** / *उषा यादव* 270
- **निराला की काव्य-भाषा : ...** / *डॉ. वर्षा गुप्ता* 273
- **राम कथा में वाल्मीकि ...** / *मीना कुमारी* 276
- **रसोपासना की पवित्रता** / *डॉ. पवन सचदेवा* 279
- **हिंदी फिल्मी ...** / *डॉ. प्रीति प्रकाश प्रजापति* 282
- **पूर्वोत्तर भारत केंद्रित ...** / *संजीव मण्डल* 285
- **कुमाउनी काव्य के ...** / *मुरली मनोहर भट्ट* 289
- **नई सदी की हिंदी ...** / *वीरेश बिसनल्लि* 294
- **लोहिया के समाजवादी ...** / *डॉ. मृदुला शर्मा* 296
- **सरदार पटेल के ...** / *डॉ. दीपक कुमार अवस्थी* 299
- **प्रतिलोम सत्ताओं का ...** / *हेमंत कुमार* 303
- **महादेव टोप्पो के ...** / *डॉ. रवि कुमार गोंड़* 307
- **साठोत्तरी कविता ...** / *डॉ. महावीर सिंह वत्स* 311
- **रचना और आलोचना ...** / *डॉ. बीना जैन* 312
- **औरत : मीडिया ...** / *डॉ. अजय सिंह चौहान* 315
- **हबीब ...** / *अशोक बैरागी-डॉ. दीपिका श्रीवास्तव* 318

रचना और आलोचना : निर्मल वर्मा का साहित्य-चिंतन

डॉ. बीना जैन

निर्मल वर्मा कलाकृति की यथार्थ-निरपेक्ष, स्वायत्त, विशिष्ट एवं स्वतंत्र सत्ता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार कला का समाज के सरोकारों से कोई संबंध नहीं होना चाहिए। यदि वह धर्म, राजनीति, या समाज के सरोकारों की दलदल में धँसा रहता है तो वह अपनी आत्मा की आवाज बनने का नैतिक आधार खो देता है। साहित्य उनके लिए आत्मा की आवाज है। उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया है कि श्रचना के सत्य को जीवन के यथार्थ से जोड़ना मुझे हमेशा दूभर काम जान पड़ता है।''[1]

लेकिन मनुष्य का अस्तित्व शून्य में विकसित नहीं होता। उसका परिवेश और उसके भीतर उत्पन्न होने वाली सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियां अनेक नई-नई समस्याओं और चुनौतियों को भी उत्पन्न करती है जिनसे मनुष्य की चेतना निर्मित होती है। एक रचनाकार का उनसे निरपेक्ष और पूर्ण स्वतंत्र होना असंभव है लेकिन निर्मल वर्मा इन सब में कलाकृति की सार्थकता या स्रोत नहीं पाते।वे साहित्य की सामाजिक उपयोगिता अस्वीकार करते हैं और तमाम मूल्यों और आचार -संहिताओं के विरुद्ध निजता को महत्त्व देते हैं।

हालाँकि दुनियावी यथार्थ को निर्मल वर्मा अस्वीकार नहीं करते क्योंकि दुनिया के कार्यकलाप, जीवन की विभिन्न संवेदनाएँ, अनुभव कृति का आधार निर्मित करते हैं। लेकिन फिर भी उनके अनुसार एक कलाकृति देखी हुई दुनिया और जी हुई जिंदगी का प्रतिबिंब नहीं होती। उसका अपना एक निजी और स्वायत्त यथार्थ होता है। उनका मानना है कि 'व्यक्ति का अनुभव इतना विलक्षण और अनूठा है कि उसे किसी भी व्यवस्था की मर्यादा अर्थ नहीं दे सकती।'[2] 'इसका सच अपने आप में है–स्वायत्त और आत्मतुष्ट है और जिसकी अहमियत इसके निज के अस्तित्व की शर्तों पर ही आंकी जा सकती है।'[3] इसीलिए आलोचना की पहली शर्त यह है कि वह कलाकृति के स्वायत्त यथार्थ को पहचान सके। इस प्रकार यथार्थ को सृजनात्मक आधार के रूप में स्वीकार करते हुए भी वे कृति के मूल्यांकन के लिए वैचारिक धरातल परन केवल उन संदर्भों को वरन् ऐतिहासिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को भी अस्वीकार करते हैं। वे कृति के विश्लेषण के लिए केवल कृति के रूप और संरचना को आधार बनाते हैं।

निर्मल वर्मा रचना में भाषा की मुख्य भूमिका स्वीकार करते हुए शब्द और भाषा को ही मूल महत्ता प्रदान करते हैं और भाषा को ही अर्थ का संवाहक बनाते हैं। इस प्रक्रिया में कृति की भाषा, दृश्य, संकेत, प्रतीक, बिंब, लय आदि को माध्यम बनाते हैं, वे कहते हैं, 'अक्सर कविता का अर्थ उसमें नहीं होता जो कहा जा रहा होता है, बल्कि वहाँ होता है जहाँ वह शब्दों के इर्द-गिर्द एक आलोक वृत्त बनता है- भाषा के भीतर एक और भाषा में।''[4] इसी कारण निर्मल वर्मा के लिए आलोचना की एक कड़ी चुनौती है कि वह कलाकृति के कथ्य से उसके अकथ्य को, उसकी भाषा से उसके मौन को, दो शब्दों में कहें तो उसकी सतह से उसकी गहराई को उजागर कर पाती है या नहीं।''[5] उनके अनुसार एक कलाकृति की भाषा के दृश्य संकेतों से ही उसके अर्थ की गहराई यानि कला के संपूर्ण सत्य को जाना जा सकता है।

रचना के मूल्यांकन और आलोचना में आपाततः वे यूरोप में चलने वाले आधुनिकतावाद के आंदोलन से जुडते हैं जिसका प्रयोजन यह था कि 'कलाकार अपनी संवेदनशीलता और अपने बिंबों में अन्वेषण के माध्यम से आधुनिक दुनिया के अनुभवों को प्रतिबिंबित करे और उसी की भाषा बोले, प्रयुक्त करे।'[6] इस आंदोलन के पुरस्कर्ता सर्जक भी थे और आलोचक भी जो रूपाकार को महत्त्व देते थे और साहित्यिक रचना को एक भाषिक कृति या भाषिक संरचना मानने पर बल देते थे और इसी रूप में उसे संप्रेषण की एक विधि स्वीकारते थे। उन्होंने साहित्य के मूल्यांकन के लिए ऐतिहासिक सामाजिक संदर्भों का निषेध किया। 'ये समीक्षक कविता को एक ओर सामाजिक ब्यौरों से और दूसरी ओर कवि से काटकर एक स्वतंत्र स्वायत्त इकाई के रूप में देखने के हिमायती थे। इसका सहज परिणाम यह हुआ कि विश्लेषण के लिए कृति का रूप और संरचना ही बच रही। मूल्यांकन का दायित्व भी 'कृति' अर्थात 'केंद्र को आलोकित' करना माना गया।'[7] निर्मल वर्मा की भी मान्यता है कि साहित्य अध्ययन का मुख्य दायित्व कृति अर्थात 'केंद्र को आलोकित' करना है।

उस समय जीवन में ईश्वर और धर्म केंद्रीय शक्ति नहीं रह गया था। दो -दो विश्व युद्धों ने यूरोपीय पूँजीवादी सभ्यता के वास्तविक-अमानवीय स्वरूप को विश्व के समक्ष प्रकट कर दिया। कवियों और दार्शनिकों ने मनुष्य को चिथड़े- चिथड़े होते देखा था। जीवन के सभी स्वीकृत मूल्य संदेहास्पद हो गए थे। 'आधुनिक मानव के इस विकेंद्रित जीवन का संपोषण कल्पना की क्रियाओं से ही किया जा सकता था.. . टेट के अनुसार 'आधुनिक साहित्य ने सामाजिक मानव की अपेक्षा व्यक्ति के अस्तित्व को, आत्मसजग बोध की अपेक्षा आवेश और इच्छाशक्ति को ऊपर उठाया है।'[8] निर्मल वर्मा भी साहित्य में कल्पना की गरिमा की प्रतिष्ठा करते हैं। वह सामाजिक मनुष्य की अपेक्षा व्यक्ति को, उसकी अस्मिता